

बैंकिंग के नये प्रतिमान : बैंकिंग आवश्यक है किंतु बैंक नहीं - क्या सचमुच?*

आर. गांधी

'बैंकिंग आवश्यक है लेकिन बैंक नहीं,' यह कथन माइक्रोसाफ्ट अध्यक्ष बिल गेट्स के हैं जिन्होंने यह बात 1994 में कही थी। आज, बाइस वर्ष बाद क्या उनकी भविष्यवाणी या पूर्वानुमान सही साबित हुआ है? मैं आपके साथ आज की चर्चा में उन्हीं बातों का पता लगाना चाहता हूं।

2. हममें से कई लोग जो दूसरों को उपदेश देते हैं प्रायः यह कहते हैं कि "हम ऐसे दो राहे पर खड़े हैं," जहां 'जबरदस्त बदलाव हमारे इंतज़ार में हैं' आदि-आदि। ऐसा इसलिए है कि किसी भी क्षेत्र में बदलती हुई प्रवृत्ति को देख पाने में हमें समय लगता है और जब तक कि हम थोड़ा रुककर सावधानी से उसे न देखें, उभरते हुए पैटर्न बड़ी आसानी से ओझल हो सकते हैं, जिसके लिए अनेक हितधारकों को उसकी बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है। और जब हम रुककर देखते हैं तब इसके अलावा और कुछ कहने की स्थिति में नहीं होते हैं कि "हम ऐसे दो राहे पर खड़े हैं," जहां 'जबरदस्त बदलाव हमारे इंतज़ार में हैं' आदि-आदि। एक ऐसा बदलाव जो हमें आश्चर्यचकित किए दे रहा है, आदि।

3. जुलाई 2014 में पीडब्ल्यूसी रिपोर्ट में 'बैंकिंग का भावी आकार- बैंकिंग और बैंकों के कार्याकल्प का समय' में वे कहते हैं कि उन्होंने मैक्रो स्तर पर पांच वैश्विक 'महाप्रवृत्ति' की पहचान की है जिनके प्रभाव, परस्पर क्रिया तथा परस्पर संघर्ष विश्व के कारोबार को पुनः आकार दे रहे हैं। जहां ये सभी बैंकिंग के लिए प्रासंगिक हैं वहीं उन्होंने यह इंगित किया है कि इन प्रवृत्तियों में से सबसे ज्यादा प्रभाव डालने वाली प्रवृत्ति 'जनांकिकी और सामाजिक परिवर्तन हैं, जो ग्रहकों की नई मांगे पैदा कर रहे हैं और प्रत्याशाओं को बढ़ा रहे हैं, और सभी स्थानों पर प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल ने ग्राहक के संबंध से लेकर कारोबारी मॉडल तक को बदल डाला है।'

4. अप्रैल 2015 में ए एलिस की समुत्थानशक्ति नाम से प्रकाशित अनुसंधान रिपोर्ट में कहा गया है कि वित्तीय संस्था उद्योग- बैंक, आस्ति प्रबंधक तथा प्रौद्योगिकी

* श्री आर. गांधी, उप गवर्नर, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा 17 अगस्त 2016 को मुंबई में आयोजित एफआईबीएसी 2016 में 'न्यू हॉरिजन्स इन इंडियन बैंकिंग' पर दिया गया समापन भाषण।

कंपनियों सहित सभी इस समय जबरदस्त बदलाव से गुज़र रहे हैं जिसका कारण यह है कि अनेक प्रमुख महाप्रवृत्तियों में बदलाव हो रहे हैं। इसमें यह निर्दिष्ट किया गया है कि विनियामकीय पूंजी की आवश्यकता, डिजिटलाइजेशन तथा प्रौद्योगिकीगत उन्नति, नये बाज़ार सहभागी, जनांकिकी तथा ग्राहकों की नई पीढ़ी के व्यवहार में परिवर्तन कुछ ऐसी ही प्रवृत्तियां हैं।

5. स्कोप रेटिंग की 'बैंकिंग में नये प्रतिमानगत बदलाव के बिंदुओं को जोड़ना - हम इस समय कहां हैं?' विषय से संबंधित रिपोर्ट में जून 2016 में कहा गया है कि 'वर्तमान प्रवृत्तियों को देखते हुए, हम यह देख रहे हैं कि बैंकों के लिए दोराहा बड़े ही खतरनाक तरीके से तीन शक्तिशाली हवाओं : प्रौद्योगिकी, विनियमन तथा मैक्रो-विकास(मुख्यतया मंद वृद्धि तथा दीर्घकालीन दरों के लिए न्यून) के मिलनबिंदु पर टिका हुआ है।'

6. प्रश्न यह है कि आखिर इन समस्त अनुसंधानों में एक जैसी बात क्या है? यह कामन बात प्रौद्योगिकी के प्रवृत्ति, विनियामकीय परिवर्तन तथा उपभोक्ता व्यवहार एवं उनकी अपेक्षाओं को लेकर है जो बैंकिंग एवं बैंक की भूमिका को पुनः परिभाषित कर रही हैं और यहां तक कि बैंकों के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा कर रही हैं। मैंने ऐसा क्यों कहा कि ये बैंकों के अस्तित्व को पुनः परिभाषित कर रही हैं? ऐसा इसलिए जैसाकि पीडब्ल्यूसी रिपोर्ट में कहा गया है कि यदि बैंकों ने इन प्रवृत्तियों और प्रगति का पूरी तरह से ध्यान नहीं रखा तो उन्हें वित्तीय संकट 'पुनः पूंजी देना, पुनः संरचित करना, पुनः आकार देना.....जो अप्रासंगिक होगा' का जोखिम पैदा हो सकता है। मेरे विचार से यह कहना बहुत ही विनम्र कथन होगा।

प्रौद्योगिकी, उपभोक्ता और विनियम

7. बैंक, आज प्रौद्योगिकी, उपभोक्ता व्यवहार एवं विनियम में हो रहे विकास के कारण तेज एवं अपरिवर्तनीय बदलाव करने के लिए बाध्य हैं। इन गतिविधियों के बारे में थोड़ा और पता करके देखते हैं।

प्रौद्योगिकी

8. आज हमारे चारों ओर चैनल्स - फिनटेक - एप्स-सोशल मीडिया जैसे शब्दों की गूंज सुनाई देती है।

9. प्रौद्योगिकी में विकास उतनी ही तेजी से हो रहा है जिस तरीके से बैंक और उनके ग्राहक आपस में संव्यवहार कर रहे हैं। इन घटनाओं ने नये प्रवेशकर्ताओं के लिए अवसर खोल दिए हैं, ज़रूरी नहीं कि नये बैंक ही हों, इसने पुराने कारोबार मॉडल्स को परे हटा दिया है और नये मॉडल्स को अपना रहा है।

प्रौद्योगिकीगत उत्पादों एवं सेवाओं की प्रचुरता जैसे वर्ल्ड वाइड वेब, मोबाइल फोन, एवं ऐप्स ने फिनटेक जैसी कंपनियों को अस्तित्व में ला दिया है जो पारंपरिक सेवाओं के लिए बहुत कम लागत पर सेवाएं प्रदान कर रही हैं, जैसे ई-भुगतान तथा आनलाइन ट्रेडिंग। सोशल मीडिया कंपनियां जैसे फेसबुक, ट्विटर तथा गूगल के पास ग्राहकों की बारी संख्या है और वे वित्तीय क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं जिससे नए प्रकार की स्पर्धा उत्पन्न हो रही है।

उपभोक्ता

10. मिलेनियल(हज़ार साल का) - इंस्टैंट ग्रेटिफिकेशन(तुरंत संतुष्टि) - नो लायलटी (कोई निष्ठा नहीं) जैसे शब्द आज गूँज रहे हैं।

11. आज युवाओं की एक नई पीढ़ी हमारे सामने है(जिन्हें मिलेनियल अर्थात् हज़ार वर्षीय कहा जाता है)। उनकी उम्मीदें अलग-अलग हैं और बैंकों के साथ वे अलग तरीके से पेश आते हैं। वे चाहते हैं कि बैंकिंग सेवाओं के लिए उन्हें बैंक न जाना पड़े। बल्कि इन सेवाओं को आनलाइन या सोशल मीडिया आधारित प्लेटफार्म के माध्यम से लेना पसंद करेंगे। वे सोशल मीडिया का उपयोग न केवल आपस में जुड़ने एवं सुसंवाद करने के लिए करते हैं बल्कि बैंकों से भी जुड़ने एवं संवाद करने के लिए करते हैं। यहां तक कि शिकायत करने के लिए वे आनलाइन एवं सोशल मीडिया को ही तरजीह देते हैं और वे पारंपरिक ग्राहकों की तरह विश्वसनीयता पर यकीन नहीं रखते हैं। यदि एक ओर मिलेनियल्स का आचरण इस प्रकार का हो गया है, वहीं पर बहुत ही परिपक्व एवं पुराने/सेवानिवृत्त ग्राहक निवेश पर ज्यादा प्रतिफल की मांग कर रहे हैं और अधिक पारदर्शिता चाहते हैं।

विनियम

12. मानक - उपभोक्ता संरक्षण - रिंग फेनसिंग (घेरा बनाना) - पूंजी, ये सारे शब्द आज गूँज रहे हैं।

13. वित्तीय संकट के बाद से विनियामकीय फोकस ज्यादातर पूंजी पर रहा है। इसकी वजह से अनेक बैंकों ने 'जोखिमपूर्ण' अथवा बहुत अधिक पूंजी वाली आस्तियों, कारोबार एवं यहां तक कि बाज़ारों से स्वयं के निवेश को हटा लिया है; इससे बैंकों की जोखिम के बारे में मनोवृत्ति में काफी परिवर्तन ला दिया है और खुदरा तथा थोक बैंकिंग के बीच स्पष्ट विभाजन रेखा खींच दी है। नई विनियामकीय अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए बैंक बहुत अधिक निवेश कर रहे हैं तथा भर्ती भी कर रहे हैं।

14. एक अन्य उपशाखा भी जिसमें विनियमों को कठोरता से लागू किया जा रहा है, वह है गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थाओं के बढ़ते हुए कारोबार का क्षेत्र एवं उनमें होने वाली वृद्धि। शैडो

बैंक(आभासी बैंक) पर विनियमन को उतनी सख्ती से नहीं लागू किया जाता है; वे बैंक के ग्राहकों को स्पर्धी सेवाएं दे रहे हैं, विशिष्ट निधि की स्थापना करते हैं या निजी इक्विटी प्रदान करते हैं।

15. इसलिए आप सभी सहमत होंगे कि इन तीन प्रवृत्तियों ने बैंकिंग और बैंक को पुनः स्पष्ट रूप से परिभाषित कर दिया है।

बैंकिंग और बैंक - पुनः परिभाषा

16. मैंने यह भी कहा था कि ये उभरती हुई प्रवृत्तियां बैंकों के अस्तित्व के लिए खतरा बन गई हैं। क्या मैं बिल गेट्स की बात को दोहरा रहा हूँ?

17. जिस समय से मुद्रा की संकल्पना को समझा जाने लगा था उसी समय से उधार देना और उधार लेने का कार्य प्रारंभ हुआ था। लेकिन बैंकिंग की अवधारणा उस समय नहीं थी। लेकिन संघटित रूप से उधार लेने और उधार देने का कार्य कुछ 700 सौ वर्ष पहले प्रारंभ हुआ था जब आधुनिक प्रकार के नये नये बैंकों की स्थापना हुई थी। बैंकों ने एक अन्य सेवा भी प्रारंभ की वह थी विप्रेषण की सेवा। इस प्रकार बैंक ये सेवाएं करते थे जैसे- उधार लेना, उधार देना तथा विप्रेषण सेवाएं, जिसे बैंकिंग कहा जाता था। बैंकिंग वह गतिविधि है जिसे बैंक अंजाम देता है। अथवा बैंक वे कहलाते हैं जो बैंकिंग का कार्य करते हैं। ऐसा हमारे बैंककारी विनियमन अधिनियम में कहा गया है।

18. हमने जिन महा प्रवृत्तियों के बारे में बात की है उसने बैंकिंग और बैंक को पुनः परिभाषित कर दिया है। दरअसल यह पुनः परिभाषा करना नहीं है, बल्कि यह परिभाषा को समाप्त करने जैसा है। अब बैंकिंग वह नहीं रही जो बैंक कर रहे हैं, वह तो अब वह भी गतिविधियां हैं जो गैर-बैंक भी कर रहे हैं। बैंक अब वे संस्थाएं नहीं रहे हैं जो विशेष रूप से बैंकिंग का कार्य कर रहे थे; अब अन्य गैर-बैंक भी बैंकिंग का कार्य कर रहे हैं।

19. अब मानदंड है ढेर सारी बैंकिंग गतिविधियां करना, और इन ढेर सारी गतिविधियों में से प्रत्येक समूह की गतिविधि को करने के लिए कुछ खास प्रकार की संस्थाएं हैं जो केवल उन्हीं गतिविधियों को निष्पादित करती हैं। भुगतान सेवा प्रदान करने वाले, पी2पी सेवाएं, (एसएमई वित्तपोषण), उपभोक्ता खुदरा वित्तपोषण, गैर-मध्यस्थता, सामूहिक निधीयन, निरंतर स्वरूप के म्युचुअल फंड, जमा विकल्प, व्यापार वित्तपोषण, इनवाइस वित्तपोषण, बिल बटाईकर्ता, बिल वसूली करने वाले, क्रेडिट निर्दिष्ट करना, खाता समूहक, ब्याज मुक्त उत्पाद, सिंडिकेटर्स, निवेश बैंकर्स, एमएफआई, कोआपरेटिक्स, एचएफसी तथा

बैंकिंग के नये प्रतिमान :
बैंकिंग आवश्यक है किंतु बैंक नहीं - क्या सचमुच?

साख-निर्धारक जैसी कुछ संस्थाएं हैं जो बैंकिंग की एक समूह की गतिविधियों के बाद अन्य समूह की गतिविधियों से लगातार जुड़ रही हैं। क्या अब बैंकों के पास बैंकिंग जैसी खास गतिविधियां शेष रह गई हैं? अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि नहीं। यही वजह है कि बिल गेट्स ने यह कहा था कि- 'बैंकिंग आवश्यक है, बैंक नहीं'।

20. ऐसा कैसे हो गया। यह मानना पड़ेगा कि प्रौद्योगिकी और ग्राहकों की अपेक्षाओं ने बैंकिंग के विभिन्न तत्वों को अलग कर दिया है या फिर अलग-अलग करने की उपलब्धता की व्यवस्था कर दी गई है।

क्या वास्तव में बैंकों का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा?

21. यह एक खामोश मुद्दा है। कम से कम पीडब्ल्यूसी अनुसंधान रिपोर्ट में यह कहा गया है कि 'जहां हम बैंकिंग के अंतिम छोर की ओर नहीं देख रहे हैं वहीं हम बैंकिंग और बैंक के समापन की ओर निश्चित रूप से देख पा रहे हैं जैसाकि इस समय हमें दिखाई दे रहा है'।

22. बैंकों से कुछ गतिविधियों को अलग कर देने से गैर-बैंक संबंधी कारोबार बहुत बढ़ गए हैं और उनकी वृद्धि भी बहुत ज्यादा हुई है। चूंकि वे विशिष्ट; एवं फोकस्ड सेवाएं प्रदान कर रहे हैं इसलिए वे चयनित सेवा को अधिक क्षमता, गति एवं किफायती दर पर उपभोक्ताओं को दे रहे हैं। इस स्थिति ने आज बैंकों को हिला कर रख दिया है और इसमें सभी प्रकार की संभव क्षमता है कि बैंक के विकास को रोक दे और अंततः भविष्य में बैंकों के अस्तित्व को समाप्त कर दे।

23. जैसाकि हम जानते हैं कि गैर-पारंपरिक प्रथाओं का विश्व में धड़ल्ले से प्रयोग किया जा रहा है। पहली यह है कि ब्याज दर कम की गई, उसके बाद उसे शून्य के निकट या शून्य तक लाया जा रहा है। लोगों का मानना था कि शून्य नीचे जाने की अंतिम स्थिति है जिसे पार नहीं किया जा सकता। अब हालत यह है कि एकदम नीचे की ओर जाने की स्थिति को भी तोड़ दिया गया है और ब्याज दर की स्थिति ऋणात्मक की ओर भी चली गई है। एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्रों तक लगातार ऋणात्मक ब्याज दर का कब्जा होता जा रहा है। क्या ऋणात्मक ब्याज दर से भी नीचे जाने की कोई संभावना है?

यदि यह प्रवृत्ति कायम रहती है तो क्या बैंक बने रह पाएंगे?

24. अन्य प्रश्न ये हैं कि बैंकों के बने रहने का औचित्य क्या है। समाज क्यों बैंकिंग का कार्य केवल बैंकों को ही करने दे अर्थात् बैंकिंग कार्य करने के लिए लाइसेंस की आवश्यकता क्यों है? आपको याद होगा कि पश्चिमी देशों में किसी को भी आधिकारिक रूप से बैंक का नाम नहीं दिया जाता है; उनके

पास केवल निक्षेप संस्थाएं या क्रेडिट संस्थाएं हैं। हमारी एफएसएलआरसी ने भी इसी प्रकार के विचार को भारतीय वित्तीय संहिता में अपनाए जाने के लिए सिफारिश की है। एक दिन श्री मोहनदास पें ने मुझसे पूछा था कि यदि गैर-बैंक संस्थाएं बैंकिंग करने लगे तो फिर इस बात का क्या औचित्य रह जाता है कि बैंक लागत के रूप में 3 प्रतिशत निवल ब्याज मार्जिन समाज पर लगाएं। अब यह कहां तक प्रासंगिक रह गया है कि एक ही छत्र के नीचे सारी बैंकिंग सेवाएं प्रदान की जाएं?

25. बैंकों के अस्तित्व के लिए एक अन्य चुनौती समाज की वित्तीय संकट के प्रति प्रतिक्रिया रही है- बैंकों के प्रति उपभोक्ताओं की अविश्वसनीयता। याद रहे कि वाल स्ट्रीट के विरोध में किस प्रकार आंदोलन हुआ था? डॉड फ्रैंक अधिनियम? द लिंकनेन एंड विकर्स रिपोर्ट्स? थोक एवं खुदरा बैंकिंग के लिए घेरा बना देना? संकट काल के बाद वित्तीय सेवा बाजार के प्रति उपभोक्ताओं की ड्रामाई तरीके से घटती हुई विश्वसनीयता की चुनौती का सामना कर रही वित्तीय संस्थाएं काफी हद तक नए परिदृश्य एवं वित्तीय सेवाओं में नए प्रतिमानों की आवश्यकता महसूस कर रही हैं।

26. बैंकों के अस्तित्व पर एक और हमला पूंजी और लीवरेज से संबंधित विनियामकीय अपेक्षाओं तथा बाजार एवं लोगों की उनकी क्षमताओं के प्रति अपेक्षा कि वे कितनी पूंजी लीवरेज कर सकते हैं, का कुल मिलाकर पड़ने वाला प्रभाव है। परिभाषा के अनुसार बैंक, जैसाकि इन दिनों में हमें यह जानकारी हो गई है कि अत्यधिक लीवर्ड संस्थाएं हैं। लेकिन यदि हम इन कारकों को ध्यान में रखकर देखें जिनका उल्लेख अभी-अभी मैंने किया है अर्थात् विनियामकीय पूंजी, बाजार और लोगों की पेशाएं - तो हम पाएंगे कि हम बैंक की 'अत्यधिक लीवर्ड संस्था' के रूप में परिभाषा को छोड़ रहे हैं। यदि हम टीएलएसी नुस्खे के हिसाब से पूंजी जोड़ दें, जो बैंक की सावधानीगत अतिरिक्त पूंजी होगी, उसके बाद लोगों की अपेक्षा के अनुसार एक बार और अतिरिक्त पूंजी जोड़ना होगा जो दबाव परीक्षण के नतीजों को नष्ट कर देगा। मुझे डर है कि बैंकों के पास कर्ज-इक्विटी का अनुपात तकरीबन 4:1 का हो जाएगा, जो अत्यधिक लीवर्ड कारपोरेट्स की स्थिति से कहीं भी भिन्न नहीं है। यही कारण है कि हम टीएलएसी को पूर्णरूपेण समर्थन देने में अत्यधिक सावधानी बरत रहे हैं तथा पूरी तरह लागू करने में झिझक रहे हैं।

27. अतः, स्पष्ट संकेत इस बात के हैं कि या तो बैंक मृतप्राय हो जाएगा या फिर भविष्य का बैंक, कल का और आज का बैंक नहीं रह जाएगा।

क्या करना होगा?

28. मुझे खेद है कि बैंकों के भविष्य के बारे में इस दो दिवसीय चर्चा के दौरान उसके समापन पर मुझे बैंकों के अस्तित्व के निराशाजनक भविष्य के संबंध में चित्रण करना पड़ रहा है। मेरा कहने का मतलब यह है कि हमें आज की हकीकतों को समझना होगा, नई संचालन शक्तियों के दबाव को समझना होगा जो बैंकिंग में नए बदलाव चाहती हैं और भावी कार्रवाइयों को प्रतिबिंबित करती हैं।

29. लेकिन आशा की किरण है। पहली यह कि प्रौद्योगिकी विकास का पूरा-पूरा फायदा उठाया जाए ग्राहकों की उम्मीदों को पूरा करने के लिए उन्हें अपने अनुरूप बना लें। नया उपभोक्ता कनेक्टिविटी, सुविधाजनक स्थिति एवं आज़ादी से कार्य करने का आदी है। इस संबंध में डेरीडीन डैडज़ी, चीफ डायर आफ ड्रीम ओवल लिमि. ने कितनी अच्छी बात कही है कि उपभोक्ताओं को कुछ ज्यादा सेवा नहीं चाहिए, बल्कि ऐसी सेवाएं चाहिए जो कभी भी, कहीं भी किसी भी प्रकार से उपलब्ध हों।

30. कुछ अन्य विद्वानों जैसे हैनी बेस्टर, जरमी ग्रे और डेविड संडर्स ने एक और नुस्खा दिया है कि जहां बैंकों को विकास करने के लिए नये अवसरों को पहचानने की सख्त ज़रूरत है और नई सूचना-आधारित प्रौद्योगिकी को अपनाने की आवश्यकता है, वहीं यह बात सर्वाधिक महत्वपूर्ण है कि वे वित्तीय सेवा प्रदान करने वालों की समाजिक जिम्मेदारियों ज्यादा से ज्यादा समझने के लिए सकारात्मक रूप से बदलाव लाएं। उनका तर्क है कि अंततः किसी भी प्रकार के नये प्रतिमान के हृदय में यह बात होनी चाहिए कि ग्राहक के फायदे के साथ-साथ अपने फायदे को भी संतुलित रखना है।

31. क्या आपको घंटी की आवाज़ सुनाई दे रही है? प्राथमिकता क्षेत्र की संकल्पना? बहुत ज्यादा दलालों से डूबा हुआ, काफी तिरस्कृत, अत्यधिक बदनाम क्षेत्र है, लेकिन उसके बावजूद अमरपक्षी(फिनिक्स) की तरह बढ़ता जा रहा है। शायद जी हां। लेकिन मेरा विचार है कि इस समय हमारे सामने परिदृश्य काफी व्यापक है। वित्तीय समावेशन में हरित वित्त, एएमएल/सीएफटी, तथा यहां तक कि कर-परिहार विरोधी प्रयासों में बैंक

किसी अलग गतिविधि कर रही संस्थाओं की तुलना में कहीं ज्यादा सामाजिक प्रासंगिकता के साथ बड़ी भूमिका अदा कर सकते हैं।

32. एक बड़ा क्षेत्र है जिसे आपने अपने ढीले रवैये के कारण छोड़ रखा है/या फिर दूसरों के लिए छोड़ दिया है जिसपर आपका अधिकारपूर्ण दावा बन सकता है, बशर्ते आप उसके लिए सतत एवं कड़ा प्रयास करें। वह है एसएमई वित्तपोषण का क्षेत्र। छोटे और मध्यम आकार के उद्यम बहुत ज्यादा हैं, फिर भी वे औपचारिक वित्तीय संस्थाओं द्वारा प्रायः नज़रअंदाज़ कर दिए जाते हैं। एसएमई क्षेत्र का विश्व के सकल घरेलू उत्पाद में हिस्सा आधे से भी ज्यादा है और जिसमें विश्व के लगभग दो-तिहाई कार्यबल को रोजगार मिलता है। लेकिन, वे पूरे विश्व में अत्यधिक उपेक्षित क्षेत्र हैं। अंतरराष्ट्रीय वित्तीय निगम(आईएफसी) की रिपोर्ट के अनुसार केवल उभरते बाज़ारों में ही छोटे कारोबार के लिए 2 ट्रिलियन अमरीकी डालर से भी ज्यादा के 'धन की ज़रूरत का अंतराल' मौजूद है। मैं इसके कारणों के बारे में चर्चा नहीं करूंगा।

33. हाल के वर्षों में, फिनटेक कंपनियों तथा बाज़ार के स्थलों को उधार देने की प्रक्रिया ने इस खालीपन में प्रवेश करना प्रारंभ कर दिया है और उसमें उन्हें अत्यधिक एवं तात्कालिक सफलता प्राप्त हुई है और यह एक शक्तिशाली प्रवृत्ति बन गई है। इस प्रवृत्ति में छोटे कारोबारों में खेल के रुख को उलट देने की क्षमता मौजूद है। क्योंकि फिनटेक समाधान काफी कुशल एवं प्रभावी हैं, फिनटेक की परिवर्तनकारी शक्ति एक अच्छा प्रदर्शन है। यदि केवल बैंक एसएमई वित्तपोषण के प्रति अपनी मौजूदा अनिच्छा की प्रवृत्ति को बदल लें तो वे इन जोखिमों के बहुत अच्छे प्रतिकारक बन सकेंगे और इसलिए वे सामाजिक रूप से अपनी प्रासंगिक भूमिका को अदा कर सकेंगे, जो बदले में उनके भावी अस्तित्व के औचित्य को सिद्ध करेगा।

34. मैं इस आइडिया के साथ अपनी बात समाप्त करना चाहता हूँ कि यदि आप स्वयं को केवल आर्थिक रूप से नहीं, बल्कि सामाजिक रूप से प्रासंगिक बनाएं तो भविष्य में आपके अस्तित्व के बने रहने की उम्मीद बनी रहेगी।

35. ध्यानपूर्वक सुनने के लिए धन्यवाद।